जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मंदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है

(पांडुशिला ,सिंघासन, छत्र, चवर प्रातिहार्य,जाप माला ,मंगल कलश, पूजा बर्तन ,चंदोवा,तोरण ,झारी ,

(शुद्ध चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किया जाता है)

नोट:-हमारे यहाँ घरो में उपयोग हेतु ,साधुओ के उपयोग हेतु ,

अनुष्ठानों में उपयोग हेतु शुद्ध घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है

SOURABH KUMAR JAIN

9993602663
77229 83010

SOURABHJN1989@GMAIL.COM

श्री पार्श्वनाथ पूजा

मुकुट सप्तमी व्रत पूजा

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

विद्याब्धि छन्द

(तर्ज- हम लाये हैं तूफान से ....।)

श्री विश्वसेन भूप बाल, लोक भाल हो,
वाराणसी में जन्म लिया, अहि कृपाल हो।
तेईसवें जिन! आपने, मन अक्ष जीत के,
कैवल्य ज्ञान पा लिया, उपसर्ग जीत के ॥
हे पार्श्वनाथ! आपसे, है ज्ञान उजाला,
भव्यों ने मोक्षमार्ग को, तुमसे है सम्हाला।
कर्मों को नाशने चरण की, अर्चना करूँ,
विनयादि गुण की प्राप्ति हेतु, वन्दना करूँ ॥

ओं ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्!

दृग मोह के अभाव से, सम्यक्त्व मिल गया,
चारित्र मोह नश गया, चारित्र खिल गया।
जल से जिनेन्द्र पूज के, जन्मों के दुख हरूँ,
उपसर्गजयी पार्श्वनाथ का, यजन करूँ ॥

ओं ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।

ज्ञानावरण को नाश के, कैवल्य पा लिया,
भव्यों को मोक्ष मार्ग का, उपदेश दे दिया।
चन्दन से आप्त पूज के, भव ताप को हरूँ,
उपसर्गजयी पार्श्वनाथ का, यजन करूँ ॥

ओं ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं।

दृग आवरण अभाव से, दृग पूर्ण खिल गया,
जिसमें अनंत नभ त्रिलोक, सब झलक गया।

अक्षत से आप्त पूज के, अक्षय सुगुण धरूँ ,
उपसर्गजयी पार्श्वनाथ का, यजन करूँ ॥

ओं ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्।

विधि अन्तराय नाश के, पन लब्धियाँ मिलीं,
जीवों को अभयदान आदि, सिद्धियाँ फलीं ।
मन का सुमन चढ़ा के, काम वासना हरूँ,
उपसर्गजयी पार्श्वनाथ का, यजन करूँ ॥

ओं ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं।

साता असात कर्म के विनाश से मिला,
सुख अव्याबाध आप में अबाध हो खिला।
इच्छा निरोध चरु चढ़ा के, भूख को हरूँ,
उपसर्गजयी पार्श्वनाथ का, यजन करूँ ॥

ओं ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।

चउ आयु के बंधन से मुक्त, मोक्ष में बसे,
अवगाहना को प्राप्त कर, निजात्म में लसे।
सुज्ञान दीप ज्योति से, अज्ञानतम हरूँ,
उपसर्गजयी पार्श्वनाथ का, यजन करूँ ॥

ओं ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं।

देहादि नाम कर्म नाश, ज्ञानमय हुये,
सूक्ष्मत्व सुगुण पा गये, चैतन्यमय हुये।
अष्टांग दृष्टि धूप से, ज्ञानादि यश वरूँ,
उपसर्गजयी पार्श्वनाथ का, यजन करूँ ॥

ओं ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।

विधि उच्च नीच गोत्र नाश, कुल विमुक्त हो,
अगुरुलघु सुगुण मिला, संसार मुक्त हो।

शुभ भाव के फलों से पूज, मोक्ष को वरूँ,
उपसर्गजयी पार्श्वनाथ का, यजन करूँ ॥

ओं ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं ।

आठों करम के बन्ध से, विमुक्त हो गये,
सम्यक्त्व आदि सद्‌गुणों से, युक्त हो गये।
अर्घों से आपको भजूँ , अनर्घ पद धरूँ,
उपसर्गजयी पार्श्वनाथ का, यजन करूँ ॥

ओं ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व.।

सखी छन्द

प्राणत विमान से आये, वामा के गर्भ सुहाये।
वैशाख दोज अलि आयी, गर्भोत्सव मंगल लायी ॥

ओं ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्तश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

पौषी एकादशि काली, जन्मोत्सव की खुशहाली।
प्रभु ने दश अतिशय पाये, हरि सुरगिरि नहुन कराये ॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्तश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

पौषी एकादशि काली, भव विरक्त हो दीक्षा ली।
लौकान्तिक सुर गुण गाते, प्रभु कचलुंचन कर भाते ॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपःकल्याणकप्राप्तश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

कलि चैत्र चतुर्थी आयी, सर्वज्ञ दशा को लायी।
जिनवर उपदेश सुनाते, भविजन के मन हर्षाते ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्तश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

सित सातें सावन आयी, पारस शिव लक्ष्मी पायी।
सम्मेदाचल यश पाता, जग भर से पूजा जाता ॥

ओं ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्तश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

यशोगान

दोहा

श्याम वर्ण तनु हाथ नव, पार्श्व देह उत्तुंग।
अहि लक्षण पद में लसे,दस भव समता संग ॥

(विद्याब्धि छन्द)

श्रीपार्श्वनाथ शान्ति के, आदर्श बन गये,
भव भव का क्रोध शत्रु जीत, सिद्ध बन गये।
प्रभु क्रोध अग्नि पे, क्षमा का नीर बहाते,
अपकारी कमठ भ्रात पे, न क्रोध जगाते ॥१॥
निज पर की शान्ति छीनता, ऐसा ये क्रोध है,
क्रोधी स्वपर को घातता, रहता न बोध है।
छह भव प्रभु ने कमठ के, उपसर्ग को सहा,
दस भव के बीच चार बार, स्वर्ग को लहा ॥२॥
बेचारा कमठ कर्म का, मारा स्वयं रहा,
कई भव में वैर भाव धार, मारता रहा।
हिंसा के पाप से नरक के, दुःख को सहा,
प्रभु पार्श्वनाथ ने क्षमा से, मोक्ष को लहा ॥३॥
मरुभूति कमठ भाई थे, सगे कमठ बड़े,
मरुभूति की पत्नि पे नजर, डालते बुरे।
इस बात से राजा ने दिया, देश निकाला,
वन में कमठ को लेने गया, भाई विचारा ॥४॥
तब क्रोध में मरुभूति पे, पत्थर पटक दिया,
क्रोधान्ध कमठ का बुझा था, ज्ञान का दिया।
मरुभूति मर के वन में, वज्रघोष गज बना,
इस बार कमठ सर्प बन के, मारता फणा ॥५॥

सल्लेखना मरण से, हस्ति स्वर्ग में गया,
बदले का भाव धार कमठ, नर्क में गया।
मरुभूति स्वर्ग सौख्य भोग, मनुज बन गये,
नृप रश्मिवेग नाम पा, तपों को धर लिये ॥६॥
वह कमठ नरक से निकल, अजगर बना महाँ,
तप करते रश्मिवेग को, निगल गया यहाँ।
मुनि रश्मिवेग कर समाधि, स्वर्ग को गये,
अजगर नरक में पाप का फल, भोगता अये! ॥७॥
अजगर नरक से आ के यहाँ, भील बन गया,
सुर स्वर्ग से आ वज्रनाभि, चक्रि बन गया।
चक्रेश साधु साधना में, लीन थे जभी,
उस भील ने अगनी लगा, जला दिया तभी ॥८॥
चक्रेश साध के समाधि, स्वर्ग सुख लहे,
वह भील पाप के फलों से ,नरक दुख सहे।
चक्रेश स्वर्ग से यहाँ, आनन्द नृप बना,
वह भील नरक से निकल के, क्रूर सिंह बना ॥९॥
आनन्द भावनायें भा के, ध्यान में गये,
तब सिंह ने आक्रमण किया, मुनि स्वर्ग को गये।
सुर स्वर्ग से आ के बने हैं, पार्श्व प्रभु महाँ।
वह सिंह नरक से आ बना, महीपाल नृप यहाँ ॥१०॥
महिपाल अग्नि तप करे, तब पार्श्व ने कहा,
लकड़ी में नाग जल रहे, क्या ज्ञान ना लहा।
साधु ने फाड़ी लकड़ी तो, अहि तड़फते मिले,
तब जलते नाग को दिये, उपदेश प्रभु भले ॥११॥
वह नाग युगल पद्मावती, अहिपती हुये,

जातिस्मरण से पार्श्व ने, व्रत तप ग्रहण किये।
महिपाल देव बन गया, ज्योतिष विमान में,
तब उसने पार्श्व को लखा, तप करते ध्यान में ॥१२॥
उस सुर कमठ ने आप पे , उपसर्ग ढा दिया,
धरणेन्द्र ने उपसर्ग को, फण से हटा दिया।
पद्मावती भी वज्र के, त्रय छत्र लगाती,
पारस प्रभु की सेवा करके , भाग्य मनाती ॥१३॥
इतने में पार्श्वनाथ जी, सर्वज्ञ बन गये,
चारों निकाय देव, जिन शरण में आ गये।
परनारी कुदृष्टि के दुख को, कमठ ने सहा,
मरुभूति ने समता से सर्व सौख्य को लहा ॥१४॥
कैवल्य के अतिशय से, कमठ ने शरण गही,
कहता मुझे क्षमा करो, प्रभु हो क्षमा मही।
उपदेश दे प्रभु लीन हुये, आत्म ध्यान में,
सम्मेद शिखर से गये, प्रभु मोक्ष धाम में ॥१५॥

ओं ह्रीं तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्व. स्वाहा।

दोहा

पार्श्वनाथ आदर्श को, धरो भव्य हितकार।
विद्यासागर सूरि से, है मृदुमति उद्धार ॥

॥ इति शुभम् भूयात् ॥

●●●

मुकुट सप्तमी व्रत पूजा

ज्ञानोदय छन्द

भव समुद्र से तारणहारे, अनादि से तीर्थंकर हैं,
हुए हो रहे आगे होंगे, त्रिभुवन के क्षेमंकर हैं।
जिनके मुख से पाप विनाशक, व्रत की विधियाँ निकली हैं,
ऐसे उपकारी जिनवर की, पूजन मैंने रच ली है ॥

ओं ह्रीं श्रीतीर्थंकरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सखी छन्द

जिन श्रद्धा का जल लाऊँ, जिनवर के चरण चढ़ाऊँ।
व्रत मुकुट सप्तमी धारूँ, मृति जन्म जरा निरवारूँ ॥

ओं ह्रीं श्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

उपशम का चन्दन लाया, जिन पूजन कर हरषाया।
व्रत मुकुट सप्तमी धारूँ, भव का संताप निवारूँ ॥

ओं ह्रीं श्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

व्रत तप के मोती लाऊँ, जिनवर की पूज रचाऊँ।
व्रत मुकुट सप्तमी धारूँ, इन्द्रिय सुख रति परिहारूँ ॥

ओं ह्रीं श्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा।

गुण गण के सुम चुन लाऊँ, जिनवर के चरण चढ़ाऊँ।
व्रत मुकुट सप्तमी पाऊँ, व्रत ब्रह्मचर्य मन लाऊँ ॥

ओं ह्रीं श्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

अनशन धर क्षुधा निवारूँ, चरुवर जिन पद में धारूँ।
व्रत मुकुट सप्तमी प्यारी, अष्टादश दोष निवारी ॥

ओं ह्रीं श्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

व्रत मोह जीतने वाला, गुण रत्न दिखाने वाला।
व्रत मुकुट सप्तमी धारूँ, आतम में ज्ञान उजारूँ ॥

ओं ह्रीं श्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

समकित अष्टांग प्रजारूँ, मिथ्यात्व असंयम वारूँ।
व्रत मुकुट सप्तमी साँची, गुरु ने पुराण में वाँची ॥

ओं ह्रीं श्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।-२।

श्रावण सित सातें प्यारी, दो सखी धरें व्रत न्यारी।
व्रत मुकुट सप्तमी जानी, क्रमशः सुर शिव सुख दानी ॥

ओं ह्रीं श्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

श्रावक मुनि व्रत सुखकारी, व्रत करना है हितकारी।
श्रावण सित सातें प्यारी, जिन पार्श्व वरें शिवनारी ॥

ओं ह्रीं श्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि. स्वाहा।

मुकुट सप्तमी व्रत कथा यशोगान

दोहा

मुकुट सप्तमी व्रत कथा, सुनो भव्य धर ध्यान।
कन्या द्वय व्रत पाल के, कर लेतीं उत्थान ॥

ज्ञानोदय छन्द

जम्बुद्वीप कुरुजांगल देशे, हस्तिनागपुर नगरी में,
विजयसेन राजा रानी थी, विजयवती गजनगरी में।
मुकुट शेखरी सुविधि शेखरी, इनकी दो कन्याये थीं,
एक दूसरे के बिन क्षण भर, नहिं रहतीं प्रतिभायें थीं ॥१॥
अवध भूप सुत त्रिलोकमणि को, द्वय कन्यायें ब्याहीं थीं,
घनी प्रीति उनकी नहिं बिछुड़े, ऐसी शादी चाही थीं।
चारण ऋषिवर बुद्धि सुबुद्धि, भिक्षा चर्या को आते,
द्वय ऋषि को विधि से राजादिक, दे आहार सौख्य पाते ॥२॥
नृप ने मुनि से कन्याओं की, प्रीति भवान्तर सुन जानी,
एक सुता धनदत्त सेठ की, इक माली कन्या जानी।
सेठ सुता जिनमति कहलायी, माली कन्या वनमति थी,
एक दिगम्बर मुनि से द्वय ने, मुकुट सप्तमी व्रत ली थीं ॥३॥
एक दिवस दोनों कन्यायें, खेल रही थीं उपवन में,

वहीं सर्प ने डसा उन्हें तो, नमस्कार जपती मन में।
दोनों मरकर स्वर्ग पहुँचती, आकर तव पुत्री बनतीं,
भवान्तरों की कथा श्रवण कर, दोनों श्रावक व्रत धरतीं ॥४॥
श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन, मुकुट सप्तमी व्रत करतीं,
ओं ह्रीं जिनेश्वराय नमः का, त्रय संध्या में जप करतीं।
सात वर्ष व्रत करके दोनों, विधि से उद्यापन करतीं,
समाधि मरण साध द्वय सखियाँ, स्वर्ग लोक में सुर बनतीं॥५॥
आष्टाह्निक में नन्दीश्वर जा, शाश्वत प्रतिमायें पूजें,
समवसरण में वे सुर दोनों, प्रभु से अपने भव पूछें।
अन्य दिनों में पंचमेरु की, करें वन्दना थुति करके,
निज विमान में जिन चैत्यों की, करे वन्दना रुचि धरके ॥६॥
स्वर्गों से आ सखी देव द्वय, नरभव पा संयम धरते,
अल्प भवों में दुखसागर से, पार होंय शिव को वरते।
जो भी नर नारी इस व्रत का, यथाशक्ति पालन करते,
वे सुर नर भव के सुख पाकर, मृदुमति शिवपुर में बसते ॥७॥

ओं ह्रीं श्रीतीर्थंकरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घं नि. स्वाहा।।

दोहा

मोक्ष मुकुट सातें दिवस, व्रत धारो सब लोग,
दुख दारिद्र विपद टलें, होवें भक्त निरोग ॥

।इति शुभम् भूयात्।

●●●